प्राथमिक कक्षाओं में कविताओं का कौतूहल

सुनीता शर्मा

कविताएँ और गीत स्कूली दिनों को न सिर्फ़ आनन्दमयी बनाते हैं बल्कि साहित्य का रसबोध भी पैदा करते हैं। प्राथमिक कक्षाओं में इनका शिक्षण जितना जीवन्त, सहज और रसपूर्ण होगा इनका कौतूहल और आस्वादन उतना ही बढ़ेगा।

भाषा सीखने के सीमित उद्देश्य से इतर कविता और गीतों से बच्चों में सौन्दर्यबोध, रसास्वादन, सृजनशीलता और जीवन सन्दर्भों की व्यापक दृष्टि पैदा करने की पैरवी करता और कुछ तौर-तरीक़े सुझाता सुनीता का यह आलेख। सं.

1.

अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बो
अस्सी नब्बे पूरे सौ
सौ में लगा धागा चोर निकल कर भागा

2.

मुर्गी माँ घर से निकली,
झोला ले बाजार चली,
बच्चे बोले चें-चें-चें,
अम्मा हम भी साथ चलें

—निरंकार देव सेवक

कविता की जानी-पहचानी दुनिया जिससे हम सभी परिचित हैं। कविता के बारे में सोचने पर सबसे पहले ज़ेहन में दादी माँ की लोरी ही आती है, क्योंकि वे हमारे मन के किसी कोने में घर बना लेती हैं और किसी मौक़े पर उभर आती हैं। आज भी जब हम उन कविताओं, खेल गीतों और लोरियों को सुनते हैं जो हमने अपने बचपन में सुनी होती हैं तो कहीं-ना-कहीं हमारे अन्दर हमारा बचपन कुलबुलाने लगता है। वे सभी स्मृतियाँ ज़ेहन में आ जाती हैं जिन्हें हम सभी ने अपने बचपन में जिया है। एक अच्छी कविता की ख़ूबी यही है कि वह सुने और पढ़े जाने के बाद स्मृति में रह जाती है। जैसे ही हम इन स्मृतियों से जुड़ेंगे तो कुछ बुनियादी सवाल हमें सोचने पर विवश करेंगे कि क्या कारण है कि प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाई की शुरुआत ही कविता से होने की बात होती है? इस बुनियादी सवाल पर सोचने पर एक बात यह भी समझ में आती है कि शुरुआती कक्षाओं में बच्चों का भाषाई विकास होता है और कविताओं से बच्चों को भावनात्मक और भाषाई पोषण मिलता है जो कि बच्चों की नैसर्गिक ज़रूरत है।

बच्चे विद्यालय आने से पहले ही कुछ खेल गीतों को गुनगुनाते हुए अपने खेलों का संचालन करते हैं, खेल गीतों की तरह ही कविताएँ भी बच्चों के मन के सबसे क़रीब होती हैं। बच्चों को कविताएँ हावभाव से गा कर सुनाना अच्छा लगता है और वे उसमें आनन्दित महसूस करते हैं और जब वे कविताओं की लय को बार-बार दोहराते हैं तो उन्हें वह बहुत जल्दी याद भी हो जाती हैं। कई बार बच्चे जब कविताओं का दोहराव करते हैं तो वे कविता के शब्दों

में नए शब्द जोड़ते-तोड़ते हुए शब्दों के साथ भी खेलते हैं जैसे– जग्गा, मग्गा, एन्ना, भिन्ना, तकधिन्ना आदि और इस काम में उन्हें मज़ा भी आता है। शब्दों के साथ खेलने के दौरान उनमें काफ़ी उत्साह दिखाई पड़ता है। इसके साथ ही वे कविता में आए शब्दों को आसानी से पकड़ लेते हैं और उन शब्दों पर पढ़ने-लिखने का काम करना आसान हो जाता है जिन्हें वे अनुमान से पढ़ने का प्रयास करते हैं। कविताओं की ख़ूबसूरती यह भी है कि वह हर व्यक्ति के लिए उसके सन्दर्भों के आधार पर अर्थ गढ़ लेती है। कई बार कविता जिस भाव से लिखी जाती है, पाठक उसे उसके अलग भाव से गढ़ लेता है। इसलिए यह कहना अनुचित नहीं होगा कि कविता साहित्य की एक ऐसी विधा है, जिसमें मनोभावों को कलात्मक और सौन्दर्यात्मक रूप से अभिव्यक्त किया जाता है। कविताओं को लेकर यह भी माना जाता है कि कविता की लय को सहजता से पकड़ना आसान होता है और इसके ज़रिए भी हम दुनिया को जानते, समझते हैं। कविता के शब्दों को सुनकर अनायास मन के भीतर उसके चित्र कौंध जाते हैं। ये स्मृति चित्र ही शब्दों के सहारे कविता का बिम्ब निर्मित करते हैं।

बच्चों के प्रारम्भिक वर्षों पर गौर करें तो हम पाएँगे कि कविताओं में बच्चों की स्वाभाविक रुचि होती है परन्तु कई बार देखने में यह भी आता है कि बच्चों के साथ कविताओं पर काम करने के दौरान अधिकांश समय कविता के अर्थ को समझाने या उसमें छुपे सन्देश को बताने में लगाया जाता है जिसके कारण कविता अपना मूल भाव और रस खो देती है। हालाँकि कुछ कविताओं में यह भी ज़रूरी होता है जैसे जो अन्य भाषाओं में लिखी होती हैं और जिसकी शब्दावली से बच्चे परिचित न हों। किन्तु ऐसी कविता जो आसानी से समझ में आती है फिर भी बड़े विस्तार से उसकी व्याख्या की जाती है तो वह बच्चों में कविताओं के प्रति नीरसता पैदा कर देती है। इसलिए यह भी ज़रूरी है कि शुरुआती कक्षाओं से ही कविता शिक्षण के बृहद् उद्देश्यों जैसे– कविता का आनन्द लेना, भाषाई सौन्दर्य बोध आदि को ध्यान में रखा जाए।

कविता शिक्षण के उद्देश्य

आमतौर पर कविता शिक्षण में जिन उद्देश्यों की चर्चा होती है उनमें से कुछ प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं :

- बच्चों को अभिव्यक्ति के मौक़े देना।
- कविता को अपने सन्दर्भों से जोड़ पाना।
- बच्चे कविताओं में रुचि ले सकें।
- बच्चे कविता की लय-ताल का आनन्द उठा सकें।
- कविता की संरचना को समझ सकें।
- बच्चे कविता के सौन्दर्य बोध को पहचान पाएँ।
- स्वयं की कविताएँ लिख सकें।
- शब्द-भण्डार बढ़ा सकें।
- बच्चों में कल्पनाशीलता विकसित हो सके।
- बच्चे कविता विधा से परिचित हो सकें।
- कविताओं को पढ़ने के लिए प्रेरित हो सकें।

कविताएँ एक ऐसा माध्यम हैं जिसमें ध्वनियों के अनुभव के साथ बच्चा, बचपन से ही खेलना पसन्द करता है और इसके चलते ही वह कविताओं को जल्दी याद कर लेता है और उसके साथ पढ़ना-लिखना भी आसानी से सीख जाता है। कविता बच्चों के लिए एक जादुई ख़ुराक का काम भी करती है और यह कभी पहेली भी बन जाती है। एक कविता से बच्चे बहुत जल्दी ऊब भी जाते हैं इसलिए एक कविता पर काम ख़त्म होने के बाद उन्हें नई-नई कविताएँ चाहिए होती हैं।

बच्चों के साथ कविताओं पर काम करने के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना ज़रूरी है–

- बच्चों के लिए उनके स्तर के अनुसार कुछ रोचक कविताओं का चुनाव किया जाए।

- बच्चों को नियम से कविताओं को सुनने-सुनाने के मौक़े दिए जाएँ और उन पर बच्चों के साथ काम किया जाए।

- कविता के शीर्षक पर बच्चों से बातचीत करना जैसे कविता का शीर्षक 'पतंग' है तो बच्चों से पूछना कि पतंग क्या होती है? आपने कभी पतंग उड़ाई है क्या? आदि।

- कविताओं को हावभाव से बच्चों के साथ गाना फिर बच्चे स्वयं से कविताओं को गाएँगे।

- कविताओं को चार्ट या श्यामपट्ट पर लिखकर पढ़ना और कविता चार्ट को कक्षा में चस्पा करना।

- बच्चों के साथ कविता पर बातचीत करना। जैसे– पतंग कैसे उड़ रही थी? आसमान में उड़ते हुए वह किसको काट रही थी? और क्या-क्या हुआ कविता में? आदि।

- कविता पर बच्चों के अनुभव पूछना और उनको श्यामपट्ट पर लिखकर एक बार बच्चों के सामने पढ़ देना कि किस बच्चे ने क्या कहा है। बच्चों को भी अनुमान से पढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

- कविता में आए शब्दों को अनुमान से पढ़ना और पढ़ कर उसको श्यामपट्ट पर लिखना और शब्दों की ध्वनियों पर बातचीत कर उनमें आए अक्षरों को अलग करना। बच्चे जब इन गतिविधियों को बार-बार करते हैं तो वे ध्वनियों को पहचान लेते हैं। कविता में आए शब्दों से अक्षरों को अलग कर, उन अक्षरों से बनने वाले अन्य शब्दों को लिखना ताकि बच्चे ध्वनियों के अन्तर को समझते हुए अक्षर की पहचान कर सकें। शुरुआत में ऐसे शब्द लिए जाएँ जिन्हें बच्चे जानते हों और उनके चित्र बनाए जा सकते हों, जैसे– उड़ती हुई पतंग, पेंच लड़ाती पतंगें। धीरे-धीरे अन्य शब्दों को भी शामिल किया जा सकता है।

- आख़िर में बच्चों के पास कविताओं से जुड़े हुए चित्र बनाने के मौक़े हों। जैसे- पतंग की कविता में पतंग, आम की कविता से आम, बिल्ली की कविता से बिल्ली आदि। चित्र बनाने के बाद उनका नाम लिखना या नाम में आए पहले अक्षर को लिखना आदि काम किया जा सकता है।

- कविता में जिन शब्दों और अक्षरों पर काम किया उनके फ़्लैश कार्ड बनाकर उनको पढ़ना। शब्द कार्ड को चित्र बनाकर कक्षा में भी प्रदर्शित किया जा सकता है ताकि बच्चों को जब-जब समय मिले वे उनको पढ़ सकें।

- कविताओं से मिलती-जुलती कविता बनाना। जैसे– 'वो देखो वो आता चूहा' से 'वो देखो वो आती बिल्ली', 'ऊँट चला भाई ऊँट चला' से 'हाथी चला भाई हाथी चला' या अन्य जानवरों पर कविता लिखना।

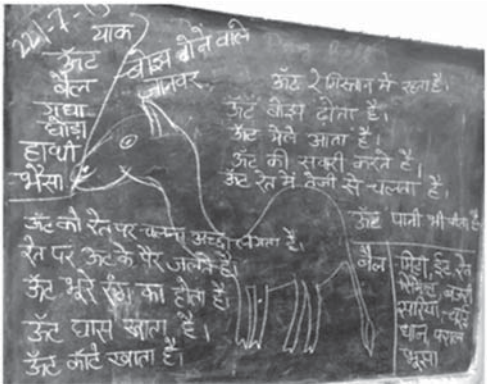
- शीर्षक देखकर कविताएँ लिखना और स्वयं से सोचकर किसी विषय पर कविता बनाना आदि।

कविताओं पर काम के कुछ अनुभव

1. कविता– ऊँट चला

इस कविता पर कक्षा 2 के बच्चों के साथ काम किया गया। जिन बच्चों के साथ यह काम किया गया वे सभी बच्चे बुक्सा समुदाय से आते हैं। इनकी स्थानीय भाषा बुक्सार है। अधिकांश बच्चों के माता-पिता मज़दूरी और खेती का काम करते हैं तो उनके पास बच्चों के लिए बहुत अधिक समय नहीं होता है।

पहले कविता पर बच्चों से बातचीत की शुरुआत कविता के शीर्षक के चित्र दिखाकर यानी ऊँट के बारे में जानने से हुई।



प्रश्न- आपने ऊँट कहाँ देखा है?

बच्चे- जी, हमारे गाँव और मेले में।

प्रश्न- मेले में क्या करता है ऊँट?

बच्चे- जी, ऊँट की सवारी करते हैं और ऊँट बोझा ढोता है।

प्रश्न- ऊँट कहाँ रहता है?

बच्चे- जी, रेगिस्तान में।

प्रश्न- अच्छा रेगिस्तान में क्यों रहता है?

बच्चे- जी, क्योंकि वो रेत में तेज़ी से चलता है।

प्रश्न- रेत में तेज़ी से कैसे चल पाता है?

बच्चे- जी, क्योंकि उसके पैर जलते होंगे।

कुछ अन्य बच्चे- जी, उसको रेत में चलना अच्छा लगता होगा।

वह रेगिस्तान में ही क्यों रहता है? इस सवाल के जवाब में बच्चे अटक रहे थे तो मैंने कहा कि हम इस सवाल पर आगे बात करेंगे और उसके बाद हम अगले सवाल पर गए;

प्रश्न- ऊँट का रंग कैसा होता है?

बच्चे- जी, भूरे रंग का होता है।

प्रश्न- ऊँट क्या-क्या करता है?

बच्चे- जी, पानी भी पीता है, घास और काँटे खाता है।

काँटों से उनका मतलब शायद काँटेदार पत्तियाँ होगा पर वे काँटे ही कह रहे थे।

प्रश्न- अच्छा अब यह बताओ कि ऊँट के अलावा आपने अपने आसपास कौन-से जानवरों को बोझा ढोते देखा है?

इस सवाल पर बच्चों को काफ़ी समय लगा। उन्होंने जानवरों को बग्गी खींचते देखा था परन्तु यह नहीं देखा था कि उनके ऊपर सामान ढोया जाता है। क्योंकि इन बच्चों के परिवेश में बैल, भैंसा, घोड़ा अधिकतर बग्गी खींचने का ही काम करते हैं। तो हमने उनकी समझ के आधार पर उसे ही बोझा ढोने में रखा।

बच्चे- बहुत सोचने के बाद- बैल, घोड़ा, गधा, हाथी, भैंसा, ऊँट और याक आदि जानवरों को सामान ढोने के काम में उपयोग में लाया जाता है।

हावभाव से कविता

बातचीत के बाद सभी बच्चों के साथ मिलकर कविता को हावभाव से गाया और फिर बच्चों के साथ मिलकर ही कविता को चार्ट पर भी लिखा।

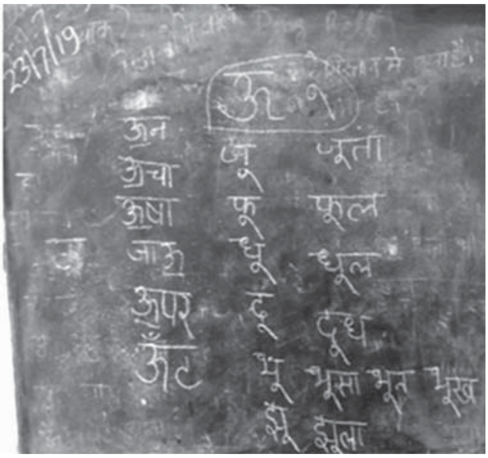
कविता पठन

चार्ट पर लिखने के बाद सभी ने मिलकर कविता को पढ़ा।

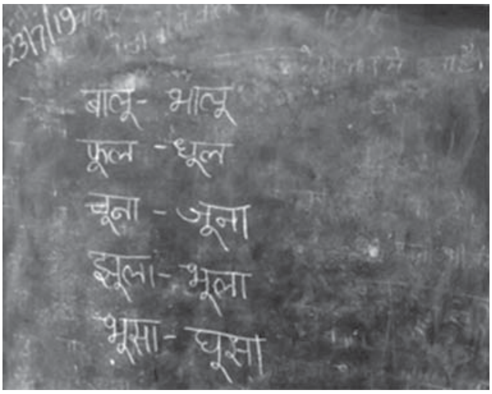
कविता पढ़ने के बाद कविता पर बच्चों से बातचीत हुई, जिसमें ऊँट के चलने के बारे में और ऊँट की विशेषताओं पर बात हुई।

कविता से पढ़ना-लिखना

इसके बाद 'ऊ' से बनने वाले शब्द लिखे गए। ऊन में ऊ आया है ऐसे ही अन्य शब्द ऊँचा, ऊँट, ऊषा आदि निकले। शब्दों में ध्वनियों को समझने के बाद ऊ की मात्रा से भी बच्चों को परिचित कराया कि यह ऊ की आवाज़ है जब इसे किसी भी अक्षर के साथ मिलाएँगे तो



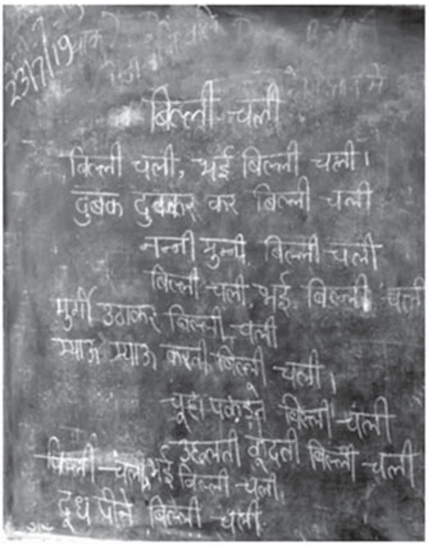
यह उसके साथ मिल कर नई आवाज़ बनाएगा जैसे– ज के साथ ऊ मिलाया तो जू, झ का झू आदि। इन शब्दों को भी लिखा ताकि बच्चे मात्रा के रूप में भी आवाज़ को पहचान सकें। जू– जूता, फू– फूल, धू –धूल, दू– दूध, भू– भूसा, भूत, भूख, झू– झूला आदि।



इसके साथ-साथ बच्चों को मात्रा से बने मिलते-जुलते शब्दों से भी परिचित कराया।

बच्चे शब्दों की आवाज़ों को समझ सकें इसके लिए उसके चित्र बनाकर भी काम किया गया। इसके बाद सभी कक्षाओं के बच्चों के साथ मिलकर कविता निर्माण पर बात हुई कि 'ऊँट चला' कविता की क्या-क्या विशेषताएँ हैं। इन विशेषताओं को ध्यान में रख कर सभी बच्चों के साथ मिलकर 'बिल्ली चली' पर कविता लिखीं।

कविता लिखने और पढ़ने के बाद सभी

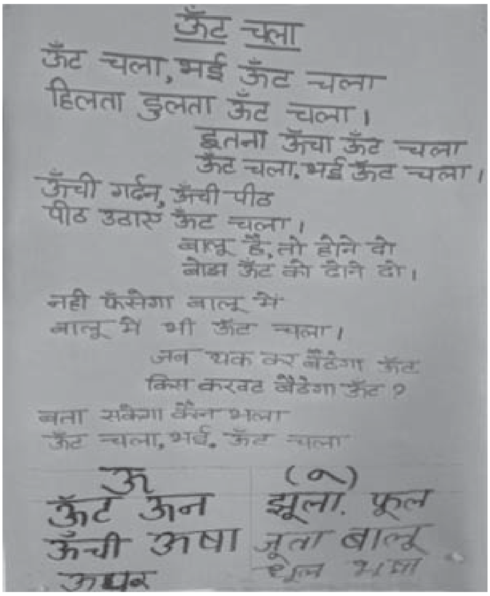


बच्चों ने अलग-अलग जानवरों जैसे– हाथी, घोड़ा, कुत्ता और बिल्ली पर अपनी स्वयं की कविताएँ लिखीं।

इस प्रक्रिया में लगभग पूरे समय शिक्षिका साथ रहीं, उन्होंने बच्चों को समझाया भी कि क्या करना है और कैसे करना है। शुरुआत में बच्चों ने कविताओं को कुछ वाक्यों में लिखा, उसपर भी बातचीत हुई कि हमने इससे पहले ऊँट की कविता पढ़ी और बिल्ली की कविता बनाई तो कोशिश करें कि हम उसी तरह कविता बना सकें। एक-एक कर सभी की कविता पर बात की और उसे तुक के आधार पर कविता की शक्ल में पिरोया।

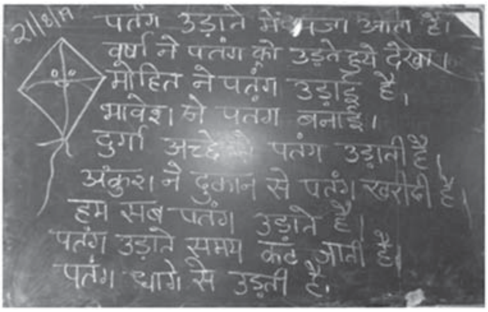
कविता लिख लेने के बाद इन्हें दीवार-पत्रिका के रूप में कक्षा में प्रदर्शित किया। अपनी लिखी कविताओं को देखकर बच्चे भी ख़ुश हुए क्योंकि वे उनके नाम के साथ जुड़े हुए थे। इस प्रक्रिया में वे एक-दूसरे को अपनी बनी हुई कविता पढ़वा भी रहे थे।

इस पूरी प्रक्रिया में देखने को यह मिला कि बच्चे अनुमान से पढ़ना, कल्पना करना आदि आसानी से कर पा रहे थे। सभी बच्चों को इस बात से ख़ुशी हुई कि उनकी बात को भी पाठ में शामिल किया गया।



2. कविता-पतंग

कक्षा 1 के बच्चों के साथ पतंग कविता पर काम किया गया। सबसे पहले बच्चों को पतंग का चित्र दिखा कर उसपर बातचीत की। बच्चों ने पतंग से जुड़े अपने अनुभवों को बताया, इसके लिए बच्चों को श्यामपट्ट पर पतंग का चित्र दिखाया गया। चित्र पर बच्चों ने इस तरह प्रतिक्रिया दी।



वर्षा- पतंग जब उड़ाते हैं तो वह कट जाती है।

भविष्य ने पतंग बनाई है।

पापा भी पतंग उड़ाते हैं।

हमने धागे से पतंग उड़ाई है।

पतंग धागे से उड़ती है।

भैया लोग भी पतंग उड़ाते हैं।

पतंग उड़ाना अच्छा लगता है।

पतंग उड़ाने में मज़ा आता है।

इसके बाद बच्चों से बातचीत हुई कि कविता उन्हें कैसी लगती है, तो सभी का कहना था कि उन्हें कविता गाना अच्छा लगता है।

इस बातचीत के बाद सभी के साथ हावभाव से कविता को गाया।

हावभाव से कविता पढ़ने के बाद बच्चों के साथ कविता पर बातचीत -

पतंग कैसे उड़ रही थी?

बच्चों ने बताया कि पतंग सर-सर करके उड़ रही थी। कुछ बच्चे कविता की लाइनों का दोहराव कर रहे थे कि सर-सर उड़ी पतंग। कुछ ने कहा कि धागे से उड़ रही थी आदि।

पतंग कहाँ उड़ रही थी?

आसमान में, पहाड़ पर आदि।

पतंग क्या कर रही थी?

सैर-सपाटा लगा रही थी और दूसरी पतंग काट रही थी।

पतंग किस में जुट गई थी?

लड़ाई में जुट गई थी।

पतंग कट कर कहाँ-कहाँ गिर सकती है?

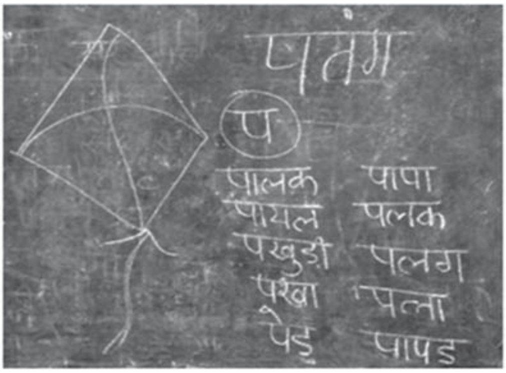
जी, नीचे जमीन में, खेत में छानी में, ट्रेन के ऊपर, मकान की छत पर, पेड़ पर, तार में भी अटक जाती है, पानी में गिर जाती है और भीग जाती है।

छानी क्या होती है?

बच्चों ने बताया कि छानी मतलब छप्पर होता है।

छत क्या होती है?

मकान की छत।



कविता से पढ़ना–लिखना

कविता पर बातचीत के बाद पतंग का चित्र बनाया और उसका नाम भी लिखा। साथ ही पतंग में कौन-कौन-सी ध्वनियाँ सुनाई दे रही हैं। ध्वनियों को अलग-अलग लिखने के बाद 'प' अक्षर पर बात हुई और बच्चों से पूछ कर प अक्षर से बनने वाले शब्द भी लिखे।

पतंग, पायल, पंखुड़ी, पंखा, पालक, पत्ता, पेड़, पपीता, पापा, पापड़, पकौड़ी।

बच्चों ने कबूतर, बकरी आदि भी बताया तो उनके साथ ध्वनियों का दोहराव किया कि ध्यान से सुनना 'प' सुनाई दे रहा है या कुछ और, तो बच्चे ध्वनियों के फ़र्क़ को समझ पा रहे थे।

ध्वनियों पर बातचीत के बाद बच्चों ने अपनी पसन्द की पतंग का चित्र बनाकर रंग भरा और उसका नाम लिखना सीखा।

पतंग कविता के बारे में भी बच्चों से बात हुई कि पतंग जब उड़ती है तो वह कटती क्यों होगी?

धागा कच्चा होता है।

उसका पतंग से झगड़ा होता है।

"पतंग सैर- सपाटे में कहाँ जाती है?"

"लड़ती है कट जाती है, पानी में गिर जाती है, हवा में उड़ जाती है"

तुम पतंग की जगह होते तो तुम क्या-क्या देखते?

हम भी उड़ते, आसमान में बैठ जाते, पतंग बन जाते तो मेला जाते, बादल पर बैठते, किताब देखते, घर देखते आदि।

कविता से जुड़ती गतिविधि

जैसे पतंग सर-सर उड़ती है वैसे ही इनकी आवाज़ों के बारे में बताओ?

घंटी- टन-टन

हवा- फर-फर

रेल- छुक-छुक

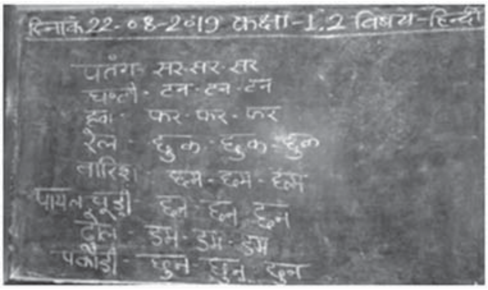
बारिश- छम-छम

पायल और चूड़ी- छन-छन

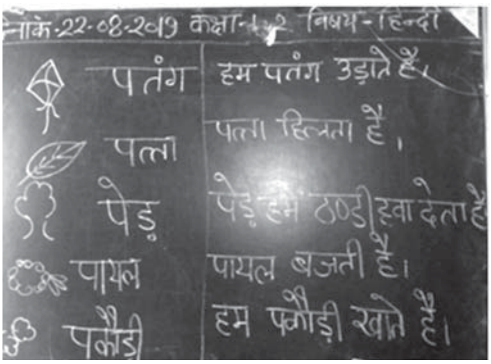
ढोल- ढम-ढम

पकौड़ी- छुन-छुन

शब्द और वाक्य निर्माण



पतंग के चित्र के साथ-साथ पत्ता, पेड़, पायल, पकौड़ी आदि का चित्र भी बनाया गया ताकि बच्चे प अक्षर को पहचान सकें। साथ ही उनके बारे में एक-एक वाक्य भी बनाया गया।



पतंग- हम पतंग उड़ाते हैं।

पत्ता- पत्ता हिलता है।

पेड़- पेड़ जंगल में होते हैं, पेड़ हमें ठण्डी हवा देते हैं, पेड़ छाया देता है।

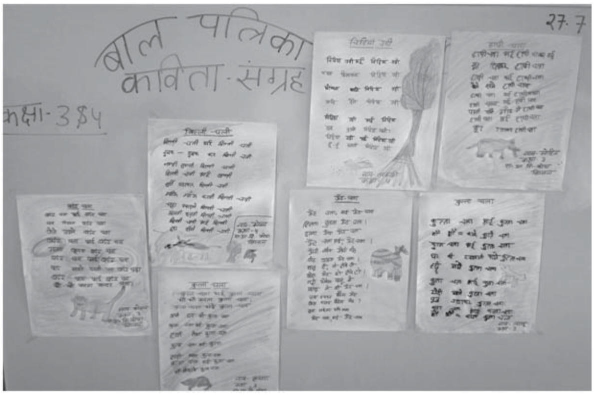
पायल- पायल बजती है।

पकौड़ी- पकौड़ी हम खाते हैं।

गतिविधि के बाद यह बात भी हुई कि जैसे पतंग उड़ती है वैसे ही और क्या-क्या चीज़े उड़ती हैं।

हेलिकॉप्टर, चिड़िया, कौआ, काग़ज़, चील, कबूतर, कपड़े, धूल, धागा, पन्नी भी उड़ती है, पानी भी उड़ता है आदि।

बच्चों के साथ कविताओं के शीर्षक पर चर्चा करने के दौरान मैंने महसूस किया कि सभी बच्चे अपनी बात रख पा रहे थे और जब बातचीत के बाद कविता हावभाव से गाई गई तो सभी बच्चे कविता का आनन्द ले रहे थे।



बच्चों में पढ़ने-लिखने के लिए भी ऊर्जा दिखी। तो यह भी कहा जा सकता है कविताएँ पढ़ने-लिखने की पूर्व तैयारी में मदद करती हैं जब वे एक-दूसरे के साथ मिलकर कविता गाते हैं, एवं अपने अनुभवों और अपनी कल्पना को कविता से जोड़ते हैं।

कक्षानुसार कविताओं पर काम करने के अलग-अलग उद्देश्य हो सकते हैं

उदाहरण के लिए कक्षा 1 में कविताओं, पर काम के दौरान यह समझ बनी कि बच्चे कविताओं में मज़े लेने के साथ-साथ पढ़ने-लिखने से भी ख़ुशी-ख़ुशी जुड़ते हैं उन्होंने जो कविता हावभाव से सुनाई होती है उसे लिखित में पढ़ने के लिए भी उत्सुक रहते हैं। कविता पर जब बातचीत होती है तो वे उसे अपने सन्दर्भों से जोड़ पाते हैं। कविताओं में आए मिलते-जुलते शब्दों से बनने वाले शब्द-खेल में बच्चे मज़े लेते हैं और स्वयं से नए शब्द बनाते हैं। कविताओं पर बच्चों के साथ बातचीत के काफ़ी अवसर होते हैं और इससे बच्चों का शब्दकोश भी बढ़ता है। जैसा कि पहले ज़िक्र किया कि इन बच्चों की स्थानीय भाषा (बुक्सार) हिन्दी से अलग थी इसलिए शुरुआत में तो बच्चे कविताओं में बहुत अधिक रुचि नहीं लेते थे और अपनी बात रखने में झिझकते थे लेकिन लगातार उन प्रक्रियाओं में काम करने के बाद बच्चों ने रुचि ली।

कक्षा 2-3 के बच्चे थोड़ा बहुत पढ़ना-लिखना सीख जाते हैं तो उनके वाक्य निर्माण और कविता निर्माण पर भी आसानी से काम हो पाता है। कविताओं में बहुत-सी ऐसी गतिविधियाँ भी हो सकती हैं जिससे बच्चों के साथ पढ़ने-लिखने पर काम हो सकता है। कविताओं में बच्चों के सन्दर्भ जुड़ते हैं तो उससे उनमें सोचने-समझने और कल्पना का नया संसार खुलता है। शुरुआती कक्षाओं (कक्षा 1 व 2) में जहाँ कविताएँ बच्चों को मज़े लेने, तुक बन्दी करने और शब्दों को जोड़ने-तोड़ने के लिए होती हैं वहीं आगे चल कर उन्हें सोचने का नया नज़रिया देती हैं। जिससे बच्चों में कल्पनाशीलता और संवेदनशीलता विकसित होती है और बच्चे कविता के सौन्दर्य की सराहना कर पाते हैं। इसका उदाहरण है कक्षा 3 भाषा की पाठ्यपुस्तक की कविता 'मन करता है'

जिसमें बच्चा कल्पना करता है कि मन करता है कि मैं सूरज बनकर आसमान में दौड़ लगाऊँ आदि। कक्षा 4 भाषा की पाठ्यपुस्तक की कविता "कोई ला के मुझे दे" में बच्चे अपनी इच्छा को जता पातें हैं कि कोई उन्हें भी उनकी पसन्द की वस्तु ला कर दे आदि। प्राथमिक कक्षाओं में जहाँ कविता आनन्द देती है वहीं बड़ी कक्षाओं में कविताएँ बच्चों को संवेदनशील बनाने के साथ-साथ सौन्दर्य बोध भी कराती हैं और बच्चे साहित्य की सराहना करना भी सीखते हैं।

सुनीता शर्मा दो दशक से भाषा शिक्षण के क्षेत्र में सक्रिय हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में उत्तराखण्ड के ऊधम सिंह नगर में भाषा स्रोत व्यक्ति के रूप में कार्यरत हैं।
सम्पर्क : sunita1@azimpremjifoundation.org